10.7.67

रिकॉर्ड :- ये कौन आज आया सवेरे-2... ओम शान्ति प्रातःक्लास 10.7.67

मीठे-2 रूहानी बच्चो प्रति बाप बैठ समझाते है बाप याद की युक्तियाँ भी बता रहे है बच्चे बैठे हैं बच्चों के अन्दर मे है कि शिव बाबा कुछ बोले। शिव बाबा आते है, समझो कि आधा घंटा शान्ति मे बैठ जाते है बोलते नही है, तो तुम्हारे अन्दर की आत्मा कहेगी कि बाबा कुछ बोले। जानते हो कि शिव बाबा विराजमान है परन्तु बोलते नही है। यह भी तुम्हारे याद की यात्रा है। बुद्धी मे शिव बाबा की ही याद है। अन्दर मे समझते हो कि शिव बाबा कुछ बोले। ज्ञान रत्न दे। बाप आते ही है तुम बच्चो को ज्ञान रत्न देने। मनुष्य तो कुछ भी बोलते है ज्ञान वा अज्ञान। बाप तो ज्ञान का सागर है नां। कहेंगे बच्चो देही अभिमानी होकर रहो। बाप को याद करो। यह ज्ञान हुआ। बाप कहते है कि इस ड्रामा के चक्र को सीढी को याद करो। यह भी ज्ञान हुआ। जो कुछ भी समझावेंगे उसको ही ज्ञान कहेंगे। याद की यात्रा भी समझाते रहते है। यह सब है ज्ञान रत्न। याद की बात जो भी समझाते हैं वो रत्न बहुत अच्छे है। बाप कहते है कि अपने 84 जन्मो को याद करो। नंगे ही आये थे नंगे ही जाना है। पवित्र आये थे फिर पवित्र बन कर ही जाना है। कर्मातीत अवस्था को जाना है और बाप से पूरा वर्सा पाना है। वो तो तभी मिलेगा जब आत्मा सतोप्रधान बन जावेगी याद के बल से। यह अक्षर बहुत वैल्युबुल है। नोट करने चाहिये। आत्मा मे ही धारना होती है। यह शरीर तो ऑर्गन्स है जो विनाश हो जावेगा। संस्कार अच्छे वा बुरे आत्मा मे ही भरे जाते है। बाप मे संस्कार भरा हुआ है सृष्टी की आद मध्य अन्त की नालेज का। इसलिये ही उनको नालेज फुल कहा जाता है। नालेज भी दो प्रकार की होती है। एक है शास्त्रो की नालेज, भक्ति की नालेज। यहाँ पर शास्त्रो की तो बात ही नही। बाप समझाते है कि शास्त्रो मे तो जो कुछ भी है वो सब रांग लिखा हुआ है। बाबा फिर राईट कर बताते है। 84 का चक्र बिलकुल सहज है। अभी 84 का चक्र पूरा हुआ है अभी हमको वापस बाप के पास जाना है। मैली आत्मा तो वहां पर जा नही सकती है। तुम्हारी आत्मा प्योअर बन जावेगी तो यह शरीर छूट जावेगा। प्योअर शरीर तो यहां पर मिल नही सके। यह पुरानी जुत्ती है। इनसे वैराग आता जाता है। आत्मा को प्योअर बना कर फिर हमको भविष्य मे प्योअर शरीर लेना है। सतयुग मे हम आत्मा और शरीर दोनो पवित्र थे। इस समय हम आत्मा अपवित्र बन गई हूं। तो शरीर भी अपवित्र है। जैसा सोना वैसा जेवर। गवर्मेन्ट भी कहती है कि हल्के सोने का जेवर पहनो। उसका भाव कमती है। अब तुम्हारी आत्मा का भी भाव अर्थात वैल्यु बहुत कमती है। वहां पर तुम्हारी आत्मा की कितनी वैल्यु रहती है। सतोप्रधान होती है नां। अब है तमोप्रधान। खाद पडी हुई है, अब कोई काम की नही है। वहां पर आत्मा प्योअर है तो बहुत वैल्यु है। अब 9 कैरेट रह गया है तो कोई वैल्यु नही है। इसलिये बाप कहते है कि आत्मा को प्योअर बनाओ तो फिर शरीर भी प्योअर मिलेगा। यह ज्ञान और कोई दे नही सके। बाप ही कहते है कि मामेकम् याद करो। कृष्ण भला कैसे कहेंगे। वो तो देहधारी है नां। बाप कहते है कि अपने को आत्मा समझ कर मुझ बाप को याद करो। कोई भी देहधारी को याद नही करो। गीता मे कृष्ण का नाम डाल कर कितना फर्क कर दिया है। अब तुम को समझ कर फिर समझाना है कि गीता तो बिलकुल ही खण्डन की हुई है। शिव बाबा तो है ही निराकार। उनका तो अलौकिक जन्म है। तुम बच्चो को भी अलौकिक ही जन्म देते है। अलौकिक ही है बाप तो अलौकिक ही है बच्चे। लौकिक पारलौकिक और अलौकिक कहा जाता है नां। तुम बच्चो को अलौकिक जन्म मिलता है। बाप तुमको एडाप्ट कर और वर्सा देते है। जानते हो कि हम ब्राह्मणों का यह अलौकिक जन्म है। अलौकिक बाप से ही अलौकिक वर्सा मिलता है। ब्र, कु, कु, बिना और कोई तो स्वर्ग का मालिक बन ही नही सकते है। तुमको बाप कितना समझाते है। आत्मा जो अपवित्र बन गई है वो सिवाय याद के पवित्र नही बन सकती है। याद मे नही रहेंगे तो खाद रह जावेगी। प्योअर बन नही सकेंगे। फिर सजायें बहुत खानी पडेंगी। सारे विश्व की आत्माओं को पवित्र बन कर वापस जाना है। शरीर तो नही जावेगा। बाप समझाते है कि अपने को आत्मा समझो। अपने को आत्मा समझते मैं कि कितनी

कितनी मुश्किलात है। फिर आद मे वो अवस्था थोडेई रहती है। अच्छा बाप कहते है कि अपने को आत्मा नही समझते हो तो शिव बाबा को तो याद करो। आत्मा ही इस शरीर से काम कराती है। शिव बाबा को भी आत्मा ही याद करती है उसमे शरीर की भी दरकार नही है। तुम आत्माये पहले-2 पवित्र थी। अब फिर पवित्र बनना है। यही मेहनत है। बडी जबरदस्त इसी मे कमाई है। यहां कितने भी शाहूकार है। अब खरबपति है परन्तु वो भी सुखी नही है। सबके सिर पर दुःख है। बडे-2 राजा प्रेजीडेण्ट आज है तो कल उनको मार खलास करेंगे। विलायत मे क्या-2 होता है। शाहूकारो पर राजाओ पर तो मुसीबत है। यहां पर भी जो राजाये थे वो प्रजा बन गये है। राजाओ पर फिर प्रजा का राज्य हो गया है। राजाओ पर भी हुक्म चलाते रहते है। है ही पंचायती राज्य। राजाओ की राजाई भी छी-नके प्रजा ने छीन ली है। ड्रामा मे ऐसी नूंध है। पिछाडी मे भी ऐसे होता है। बहुत ही आपस मे लडते रहेंगे। एक दो को अनाज नही देंगे। कोई भी चीज कहां पर जास्ती होती है कहीं पर कम होती है। तो इस पर भी लडेंगे। तुम जानते हो कि कल्प पहले भी ऐसे ही हुआ था। तुम गुप्त वेश मे दिल वा जान सिक वा प्रेम से अपना गंवाया हुआ राज्य ले रहे हो। तुमको पहचान मिली है कि हम तो मालिक थे। सूर्यवंशी देवताये थे। अभी तो फिर वो ही बनने लिये पुरुषार्थ कर रहे है। क्योंकि यहां पर तुम सत्य नारायण की कथा सुन रहे हो नी बाप दवारा की हम नर से नारायण कैसे बनेंगे। बाप आकर राजयोग सिखाते है। भक्ति मार्ग मे सब कोई भी सिखा नही सके। तुम जानते हो कि किसी भी मनुष्य को बाप टीचर गुरु नही कह सकते है। भक्ति मार्ग मे कितनी पुरानी-2 कहानियां बैठ सुनाते है। फिर बुढी मातायें बच्चो को नींद कराने लिये कहानियां बैठ सुनाती है। तुम बच्चो को बाप यह कहानी सुनाते है 2।जन्मो का तक विश्राम पाने लिये।पावन तो जरूर बनना ही पडे। बाप कहते है अपने को आत्मा समझो। आधा कल्प ड्रामाअनुसार देहअभिमानी होकर रहे हो। अब देहीअभिमानी बनना है। ड्रामा अनुसार अब पुरानी दुनियां को बदल कर नया बनाना है। दुनियां तो एक ही है। फिरपुरानी से वो नई बनेगी। नई दुनियां भी तो नया भारत था उसमे तो सब देवी देवताये ही थे। वहां पर नैचरल ब्यूटी थी। आत्मा प्योअर हसीन बन जाती है। प्योअर आत्मा को शरीर भी प्योअर मिलता है। बाप कहते है मै आकर तुमको हसीन,देवता बनाता हूं। तुम बच्चे अपनी जांच करते रहो कि हमारे मे कोई अवगुण तो नही है।याद मे भी रहना है। पढाई भी पढनी है। यह है बहुत बडी पढाई। एक ही पढाई है। उस पढाई मे तो कितने किताब आद पढते है।यह पढाई है ऊंच ते ऊंच। पढाने वाला भी है ऊंच ते ऊंच शिव बाबा। ऐसे नही कि शिव बाबा कोई इस दुनियां का मालिक है। विश्व का मालिक तो तुम बनते हो नी। कितनी नई-2 गुह्य बाते तुमको समझाते रहते है। मनुष्य समझते है कि परमात्मा नई सृष्टी का मालिक है। बाप बैठ समझाते है कि मीठे-2 बच्चो मै इस सृष्टी का मालिक नही बनता हूं। तुम मालिक बनते हो और यथार्थ रीती पुरुषार्थ करते हो।तुम मालिक बनते है फिर राज्य गंवाते हो फिर मालिक बनते हो। विश्व इसको ही कहा जाता है मूल वतन वा सूक्ष्म वतन की बात नही है। मूल वतन से तुम यहां पर आकर 84का चक्र लगाते हो। फिर बाप का आना होता है। बाप समझाते है कि कैसे तुमने पहले-2 प्रारब्ध पाई फिर कैसे गंवाई है। अब फिर तुमको पुरुषार्थ कराता हूं उस प्रारब्ध को पाने लिये जिसको कि तुमने गंवाया है। हार और जीत का खेल है नी। रावण कौन है क्यो उनको जलाते है यह भी कोई नही जानते है। यहीं रावण राज्य है तो ही उनको जलाते है। अब तुम बच्चे जानते हो कि कैसे रावण राज्य खलास होता है। बाप कितनी सहज रीती समझाते है। बाप खुद बैठ पढाते है। वहां परतो मनुष्य-2 को पढाते है। है तो तुम भी मनुष्य परन्तु तुम तो आत्माओ को बाप पढाते है नी। पढाई के संस्कार आत्मा मे ही रहते है।अब तुम जानते हो कि हम बहुत नालेज फुल बने है।वो तो सब है भक्ति की नालेज। शास्त्रो की भी नालेज है। यह है रूहानी नालेज। [illegible] रूहानी [illegible] नालेज [illegible] है।5000[illegible] पहले भी